

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

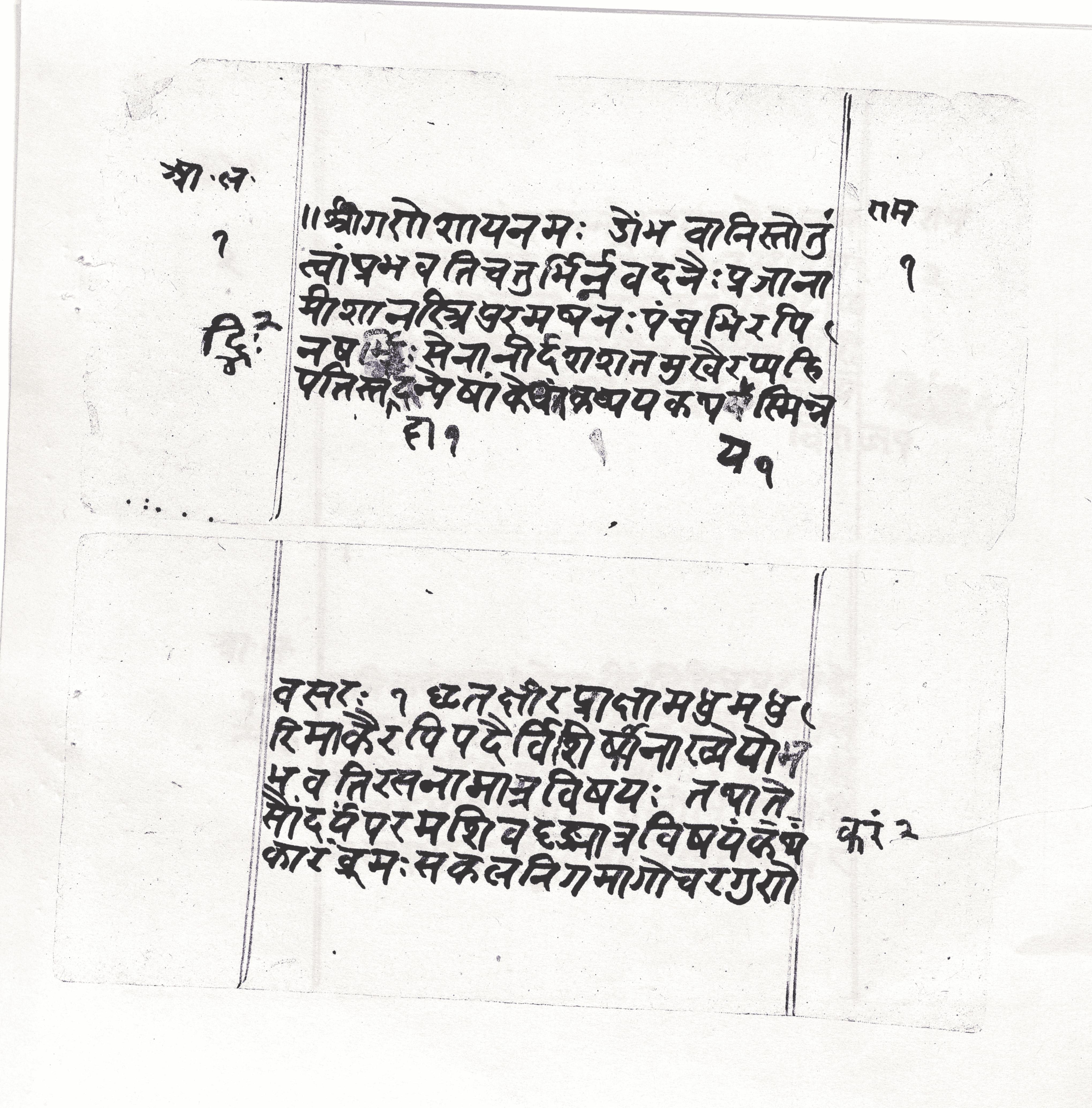
https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



Accession No: -816-M127

Title: - Dilorogosel.

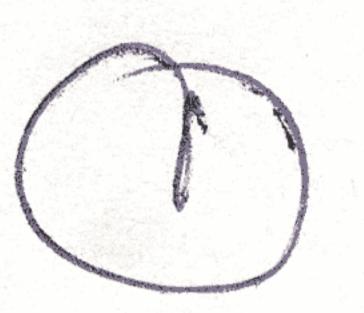
Subject: poetry

Author: - ej-+1-dilef

Facte: , A.D. 1828

Till D





Checked 2012

भाव मिन करंममा धं ते स्व कि विविध पर एके मिन करंममा धं ते समे ते साने दे कुम पिन व के प्राप्त के स्व कि प्राप्त के स्व कि प्राप्त के स्व कि सामि कि के स्व कि सामि कि सामि कि सामि कि सामि कि ना द्वारित जा के सामे कि सामि क

3

न ब्रम्म विस्पृत्तपाप्रतिष्णं यातेनित्त त्र श्रीत्वर द्वस्य मदाशानेनित्रणा प्रस्न याभित्रं भग वितित्वा भ्यगस विते समाधापस्य चितित्वा भ्यगस

मुक्ताभिजेमर बतिताचात्वक मेरे कत्रस्पाराष्ट्रभागां कच पत्न न तास्त क्रिस्र मार जा हे जाजी वित्रसिति दानदलतिका ६ मपरागमां बीरोग कत्रियगुरागः सादर मिस् म्त्रयं से अगि । (वे

मेन जी में तमित रेत विलयति अपरो कास वाजगतिस के लेपत्प रिक्रतः प्रथ मारिक्षणा पुरस्ति ति किल के वत्यपद की किया में भी मारागलम सिसक लाम्बायन ननील म पीनास लेप मद

ब्रिश् समनीयां सगतं लमादिः दामा नामगति सन कुंदपि विजयसतां म स्रितीम समस्पर ज्ञासमा हिंदी च प्रस्ताभ क्रिसेयदि च ममा लो लमनसा लमा सम्मा

4

आः (नः

सद्ध्यम बलो बेपो हम बना प्रयाद प्रात्ती पंदिशातिम श्रुरं बात्र कर्जने स् या के के मिना विश्वित्र होती ती सि या के के मिना विश्वित्र होती ती सि या के के मिना के प्राप्त प्राप्त हो के वित्र हैं। या का का कर कि या ने स्वार स्वार स्वार स्वार

विवारसादी सामुपगते नचे दिने रचारन पटम हो कत्यत तिका विवायमाने क्यामतरव श्री पित्र हो १० महात विवयासत वचरमायं के रहम गे निधायान्य या ले हे नामित्रमिहमयादैनतममे तथा हिलाजेतायदेनमित्रायत्रम् भागते वालं वाद्यन्निविद्यामि शरमं १९ स्य स्पर्शतस्यप् स्तमते हमपदं वीयपारप्पापा

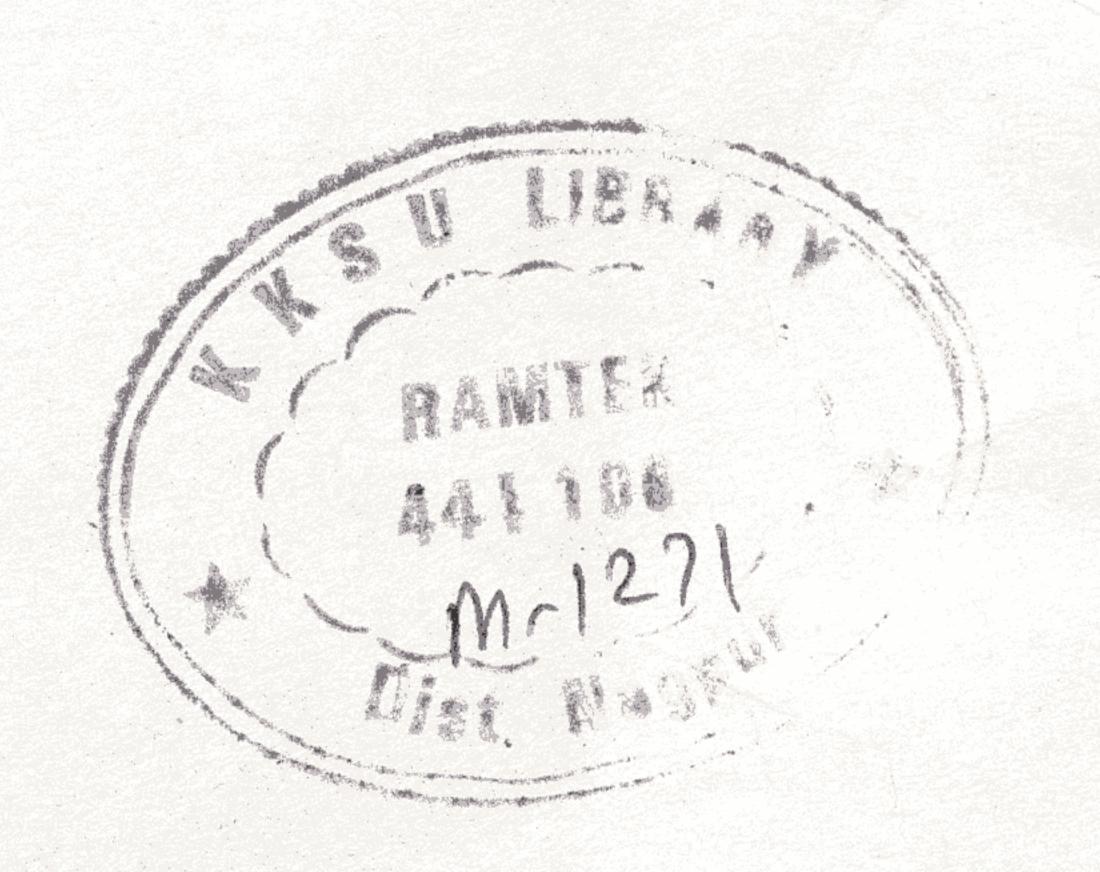
ने नियति गेगो द्विमितितं तपातेत त्या परितमितनमं तमिमणि वेत्व उ छ जिये प्रशासिक के विनना पति त्ये १२ ल प्रमादिका विषय प्रस्ताभेन विषम स्वमणीनामि श्रीः ल श्री विक्रमाप्रसम्पावितरता इतीया तः प्राच्याकलकुक्ना चार्खियमनस् दाश्रासंनस्र दिनम् कितमीशानिकुरत तः १३ स्पर नानारतास्परिकमप्र वितिष्ठतिपत्तल्यदाकारं ने स्टब्स्

परिश्वाभीतिशिखरं मुखंद व ले. द्रप्रस्ति परिवारं विजयतत्वागाः रे २ रंगितिम वनम हाराजरमागि १४ वि वासः के तासे इविंगतम् स्वापाः स्तु ति बरः कुरं येत्रे तो कंत्रते व बर्ज स्तर

र सिंहनि कर सहग्राः प्रारोग्यास्तद व विभागित्रातनयेनते सीभाग्यस्य क् वेदिषमनाग्रसित्रसना १५ ळ बाळ चापानं विषमग्रासिताना गर्वसित्र प्रमुणानं सीपास क्षेत्रगानि वहास व

णितिधः समग्रासामग्रीनगतिविगते विस्मरियापेदेनस्पेश्वपितवजनि साभाग्यम्हमा १६ श्रीश्रेषद्रस्राज्य लपतिथिनस्रितिस्मरानिष्वाः शानः सत्यस्मितस्य एएशुपतिः द

या खोतस्य ज्वरज्ञानित पी संस्ति २० ११ ॥ ३३ ॥ ६६ ॥ ६ति श्रीम खेरकरा चार्य विरिष्ठ १९ तं याने दल रुरी सो ते संपर्रा ॥ ३३॥ जन्मां से प्राण जारती संप्रति । १३॥ जनस्य प्राण जारती संप्रति । १६॥



,CREATED=23.10.20 14:46 TRANSFERRED=2020/10/23 at 14:48:18 ,PAGES=9 ,TYPE=STD ,NAME=S0004483 Book Name=M-1271-ANAND LAHARI ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF

[OrderDescription]